# MAHARAJA COLLEGE ,ARA

## UG @ SEM- II

## MJC-2 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

## Unit – 1 विद्यापति (विद्यापति पदावली, संपा : रामवृक्ष बेनीपुरी)

### विद्यापति पद–2

देख देख राधा रूप अपार।
अपरुब के बिहि आनि मेराओल खिति–तल लावनि सार।।
अंगहि अंग अनँग मुरछाएत हेरए पड़ए अथीर।
मनमथ कोटि–मथन करु जे जन से हेरि महि–मधि गीर।।
कत–कत लखिमि चरन–तल नेओछए रंगिनि हेरि बिभोरि।
करु अभिलाख मनहि पदपंकज अहनिसि कोर अगोरि।।

**प्रसंग : –** प्रस्तुत पद में कवि विद्यापति ने राधा के अपूर्व सौंदर्य का वर्णन करते हुए उनकी वंदना की है।

**अर्थ –** कवि राधा के अलौकिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि राधा के अपार रूप–सौंदर्य को तो देखिए। न

# MAHARAJA COLLEGE ,ARA

जाने किस ब्रह्मा ने क्षिति के नीचे यानी धरती पर इस अपूर्व सुंदरी को कौन से सौंदर्य तत्व से बनाया है। जिस ब्रह्मा ने इस धरती की रचना की, उसने राधा को नहीं रचा होगा, क्योंकि दोनों के रचयिता एक होते तो राधा के समान सुंदरी एक–आध ही सही दूसरी भी मौजूद होती। राधा के प्रत्येक अंग की शोभा को देखकर कामदेव का मन भी चंचल हो जाता है और वे मूर्च्छित हो जाते हैं। इतना ही नहीं, करोड़ों कामदेव को लज्जित करने वाले श्री कृष्ण भी राधा के अपार सौंदर्य को देखते हुए धरती पर गिर जाते हैं। कितनी ही लक्ष्मी अनेक रंगो को सुशोभित करने वाली सुंदरी राधा के सौंदर्य को देखकर उनके चरणों पर न्योछावर होती हैं और वे लक्ष्मियाँ मन ही मन यह अभिलाषा करती हैं कि वे राधा के चरण–कमलों को दिन–रात अपनी गोदी में अगोरकर रखें।

## विशेषता :–

1. इस पद में राधा के अपूर्व–अलौकिक सौंदर्य का वर्णन है।

# MAHARAJA COLLEGE ,ARA

2. 'देख–देख' की आवृति से राधा को देखने की आतुरता व्यंजित होती हैं।
3. 'अंगहि अंग' से राधा के सर्वांग सुंदरी होने का भाव व्यक्त करता है।
4. राधा को सौंदर्य इतना घातक है कि सभी के मन को मोहने वाले श्री कृष्ण भी घायल होकर धरती पर गिर जाते हैं।
5. इस पद की भाषा साहित्यिक मैथिली है।